16-04-2023

क्यूबा ने मिलाया इंडिया से हाथ

क्यूबन रिसर्च इंस्टिट्यूट ऑन शुगरकेन डेरिवेटिव्स ला हबाना ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान से हाथ मिलाया

डीटीएनएन

कानपुर । क्यूबा ने अपनी चीनी इकाइयों की उत्पादकता बढ़ाने और हरित ऊर्जा सहित कई अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर से सहयोग हेतु अनुरोध किया है। क्यूबा के क्यूबन रिसर्च इंस्टिट्यूट ऑन शुगरकेन डेरिवेटिव्स ला हबाना ने इस उद्देश्य के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के साथ तीन साल के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का इरादा किया है।

इससे पहले क्यूबन रिसर्च इंस्टिट्यूट ऑन शुगरकेन डेरिवेटिव्स की जनरल डायरेक्टर सुश्री मारिएला गैलार्डो कैपोट के नेतृत्व में एक टीम ने फरवरी 2023 में गतिविधियों को देखने और प्रारंभिक चर्चा करने के लिए संस्थान का दौरा किया था। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि इस विषय पर हमने चर्चा का एक और दौर शुरू किया और अब हमें उनकी ओर से औपचारिक रूप से एमओयू का मसौदा प्राप्त हो गया है।

क्यूबा को दुनिया का चीनी का कटोराज के रूप में जाना जाता था, क्योंकि यहाँ बड़े पैमाने पर चीनी उद्योग हुआ करता था, जो अब दयनीय स्थिति में है। इसकी जगह अब ब्राजील और भारत द्वारा ह ले ली गई है। क्यूबा में चीनी उद्योग तत्कालीन सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर था लेकिन सोवियत संघ के पतन के बाद क्यूबा में चीनी उद्योग को झटका लगा। क्यूबा की चीनी मिलों मे आधुनिक मशीनरी, दक्षता और सह उत्पादों के उचित उपयोग की कमी है और इसलिए वे चाहते हैं कि हम सुधार के लिए रास्ता दिखाएं, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने कहा ।

यह संस्थान की एक अद्भुत यात्रा थी और हम इस समझौते में हस्ताक्षर करने के इच्छुक हैं जो क्यूबा की चीनी मिलों के तकनीक स्टाफ के विकास कार्यक्रमों के संचालन, शोधकर्ताओं के आदान-प्रदान और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर केंद्रित है, क्यूबन रिसर्च इंस्टिट्यूट ऑन शुगरकेन डेरिवेटिव्स की जनरल डायरेक्टर सुश्री मारिएला गैलार्डो कैपोट ने सूचित किया। निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने बताया कि हम जल्द से जल्द समझौते पर औपचारिक हस्ताक्षर करने के लिए अपने प्रशासनिक मंत्रालय, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की मंजूरी मांग रहे हैं।

क्यूबा की चीनी मिलों में उत्पादन बढ़ाने को समझौता जल्द

❑ तकनीकी स्टाफ को प्रशिक्षण, शोधकर्ताओं के आदान-प्रदान के साथ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर भी चर्चा

कानपुर, 15 अप्रैल। क्यूबा की चीनी इकाइयों की उत्पादकता बढ़ाने और हरित ऊर्जा सहित कई अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन को अब राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर पूर्ण सहयोग देगा। क्यूबा के रिसर्च इंस्टीट्यूट आन शुगरकेन डेरिवेटिव्स, ला हबाना ने एनएसआई के साथ तीन साल के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर का इरादा किया है। इससे पहले क्यूबन रिसर्च इंस्टीट्यूट आन शुगरकेन डेरिवेटिव्स की जनरल डायरेक्टर मारिएला गैलार्डो कैपोट के नेतृत्व में एक टीम ने फरवरी 2023 में गतिविधियों को देखने और प्रारंभिक चर्चा के लिए संस्थान का दौरा किया था। समझौते होने पर क्यूबा चीनी मिलों के तकनीकी स्टाफ के विकास कार्यक्रम के संचालन, शोधकर्ताओं के आदान-प्रदान और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर केंद्रित होगा। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहाकि इस

एनएसआई के निदेशक व अन्य।

विषय पर चर्चा का दौर शुरू किया और अब उनकी ओर से औपचारिक रूप से एमओयू का मसौदा प्राप्त हो गया है। निदेशक ने बताया कि क्यूबा को दुनिया का चीनी का कटोरा के रूप में जाना जाता था। यहां बड़े पैमाने पर चीनी उद्योग के साथ निर्यात होती थी। अब ब्राजीय और भारत ने इसकी जगह ले ली है। क्यूबा में चीनी उद्योग तत्कालीन सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर था। सोवियत संघ पतन के बाद यहां के चीनी उद्योग को झटका लगा। क्यबा की चीनी मिलों में आधुनिक मशीनरी, दक्षता और सह उत्पादों के उचित उपयोग की ककमी है और इसलिए वहां सुधार का रास्ता दिखाने का अनुरोध किया गया। निदेशक ने बताया कि जल्द ही औपचारिक हस्ताक्षर करने के लिए प्रशासनिक मंत्रालय, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की मंजूरी मांग रहे है।

क्यूबन रिसर्च इंस्टिट्यूट डेरिवेटिव्स ला हबाना ने एन एस आई के साथ 3 वर्ष के समझौते पर हस्ताक्षर करने का किया इरादा

संवाददाता
अरुण जोशी

क्यूबा ने अपनी चीनी इकाइयों की उत्पादकता बढ़ाने और हरित ऊर्जा सहित कई अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान,कानपुर से सहयोग हेतु अनुरोध किया है। क्यूबा के क्यूबन रिसर्च इंस्टिट्यूट ऑन शुगरकेन डेरिवेटिव्स ला हबाना ने इस उद्देश्य के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के साथ तीन साल के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का इरादा किया है इससे पहले क्यूबन रिसर्च इंस्टिट्यूट ऑन शुगरकेन डेरिवेटिव्स की जनरल डायरेक्टर सुश्री मारिएला गेलार्डो कैपोट के नेतृत्व में एक टीम ने फरवरी 2023 में गतिविधियों को देखने और प्रारंभिक चर्चा करने के लिए संस्थान का दौरा किया था। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निर्देशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि इस विषय पर हमने चर्चा का एक और दौर शुरू किया और अब हमें उनकी ओर से औपचारिक रूप से एमओयू का मसौदा प्राप्त हो गया है क्यूबा को %दुनिया का चीनी का कटोरा% के रूप में जाना जाता था, क्योंकि यहाँ बड़े पैमाने पर चीनी उद्योग हुआ करता था, जो अब दयनीय स्थिति में है। इसकी जगह अब ब्राजील और भारत द्वारा ले ली गई है। क्यूबा में चीनी उद्योग तत्कालीन सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर था लेकिन सोवियत संघ के पतन के बाद, क्यूबा में चीनी उद्योग को झटका लगा। क्यूबा की चीनी मिलों में आधुनिक मशीनरी, दक्षता और सह उत्पादों के उचित उपयोग की कमी है और इसलिए वे चाहते हैं कि हम सुधार के लिए रास्ता दिखाएं, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा

संस्थान,ने कहा यह संस्थान की एक अद्भुत यात्रा थी और हम इस समझौते में हस्ताक्षर करने के इच्छुक है जो क्यूबा की चीनी मिलों के तकनीक स्टाफ के विकास कार्यक्रमों के संचालन, शोधकर्ताओं के आदान-प्रदान और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर केंद्रित है, क्युबन रिसर्च इंस्टिट्यूट ऑन शुगरकेन डेरिवेटिव्स की जनरल डायरेक्टर सुश्री मारिएला गेलार्डो कैपोट नै सूचित किया निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने बताया कि हम जल्द से जल्द समझौते पर औपचारिक हस्ताक्षर करने के लिए अपने प्रशासनिक मंत्रालय,उपभोक्ता मामले,खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की मंजूरी मांग रहे हैं।

कानपुर 8
रविवार, 16 अप्रैल 2023

शर्करा संस्थान का क्यूबा से व्यापारिक समझौता , चीनी उद्योग को मिलेगी गति

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर। चीनी उद्योग को तेजी से गति प्रदान करने के लिए क्यूबा ने राष्ट्रीय शंकरा संस्थान के साथ 3 साल का व्यापारिक करार किया है । आपको बताते चलें कि गत फरवरी माह में क्यूबा की जनरल डायरेक्टर मारिएला गैलार्डो अपने पैनल के साथ एनएसआई पहुंची थी । यहां उन्होंने पूरे संस्थान का निरीक्षण करते हुए तकनीकी उपकरणों के माध्यम से चीनी बनते हुए देखा। जिसके बाद उन्होंने निदेशक नरेंद्र मोहन और महेंद्र कुमार पांडे के साथ बैठक कर अन्य जानकारियां भी हासिल की । क्यूबा से आई टीम पुनः अपने गंतव्य की ओर रवाना हो गई । एनएसआई के निदेशक नरेंद्र मोहन ने बताया कि क्यूबा ने व्यापारिक समझौता कर दिया है समझौते के मुताबिक अगले 3 वर्षों तक वह एन एस आई के सहयोग से चीनी के कारोबार में कार्य करेगा ।

क्यूबा ने एनएसआई से मांगी मदद

अपनी चीनी इकाइयों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए करेगा करार

क्यूबा की टीम पहुंची एनएसआई गतिविधियां देखीं

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। कभी दुनिया का चीनी का कटोरा कहे जाने वाले देश क्यूबा ने अपनी चीनी इकाइयों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट से मदद मांगी है। गन्ने से पैदा होने वाले अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों और हरित ऊर्जा के लिए भी एनएसआई से तकनीक देने का अनुरोध किया है।

क्यूबा से आई टीम के सदस्यों के साथ एनएसआई निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन।

क्यूबन रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन डेरिवेटिव्स की जनरल डायरेक्टर मारिएला गैलार्डो कैपोट की अगुवाई में क्यूबा के विशेषज्ञों की टीम एनएसआई में है। टीम ने एनएसआई के साथ तीन साल के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने की पेशकश की है। निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि औपचारिक रूप से एमओयू का मसौदा प्राप्त हो गया है। उन्होंने बताया कि क्यूबा में कभी बड़े पैमाने पर चीनी उद्योग हुआ करता था लेकिन अब दयनीय स्थिति में है। उसकी जगह अब ब्राजील और भारत ने ले ली है।

उन्होंने बताया कि समझौते के तहत एनएसआई क्यूबा की चीनी मिलों के तकनीकी स्टाफ के विकास के कार्यक्रमों के संचालन, शोधकर्ताओं के आदान-प्रदान प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में मदद करेगा। प्रशासनिक मंत्रालय, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय से मंजूरी मांग रहे हैं।

क्यूबा को चीनी उत्पादन की आधुनिक तकनीक सिखाएगा एनएसआइ

जासं, कानपुर : कभी चीनी का कटोरा रहे क्यूबा ने अपनी चीनी मिलों के संचालन के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) से तकनीकी मदद मांगी है। संस्थान की मदद से क्यूबा की चीनी मिलों का अगले तीन साल में कायापलट किया जाएगा। चीनी के अधिक उत्पादन के साथ ही एथेनाल व अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार किए जाएंगे। क्यूबा के रिसर्च इंस्टीट्यूट आन शुगरकेन डेरिवेटिव्स ने समझौता ज्ञापन के लिए अपना प्रस्ताव भेजा है।

एनएसआइ के निदेशक डा. नरेन्द्र मोहन ने बताया कि क्यूबा के ला हवाना स्थित क्यूबन रिसर्च इंस्टीट्यूट आन शुगरकेन डेरिवेटिव्स की महानिदेशक मारिएला गैलार्डो कैपोट के नेतृत्व में टीम ने फरवरी में यहां आकर संस्थान का कामकाज देखा था। संस्थान के अनुसंधान और चीनी मिलों से संबंधित अत्याधुनिक तकनीक के बारे में जानने के बाद ही संस्था ने मदद मांगी है। उन्होंने बताया कि क्यूबा के संस्थान से अनुरोध मिलने के बाद एनएसआइ ने केंद्र सरकार के उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की अनुमति मांगी है।

सोवियत संघ के विघटन के बाद चीनी उत्पादन में पिछड़ा क्यूबा

क्यूबा कभी पूरी दुनिया में चीनी का सबसे बड़ा उत्पादक देश था। अब ब्राजील और भारत सबसे ज्यादा उत्पादन कर रहे हैं। सोवियत संघ के साथ क्यूबा का रिश्ता बहुत मजबूत था। सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप को क्यूबा से बड़े पैमाने पर चीनी निर्यात होती थी लेकिन सोवियत संघ के पतन के बाद क्यूबा में चीनी उद्योग को झटका लगा। अब क्यूबा की चीनी मिलों मे आधुनिक मशीनरी व कार्यकुशल कर्मचारी न होने से चीनी के अलावा अन्य सहयोगी उत्पादों का निर्माण नहीं हो पा रहा है।

करार संभव | क्यूबा के संस्थान के साथ करार करने के लिए राजी, हरित ऊर्जा को मिलेगा बढ़ावा, मूल्य संवर्धन होगा

एनएसआई के विशेषज्ञ क्यूबा में बढ़ाएंगे चीनी की मिठास

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) के विशेषज्ञ क्यूबा में चीनी की मिठास बढ़ाएंगे। वहां चीनी का उत्पादन क्षमता विकसित की जाएगी।

हरित ऊर्जा को बढ़ावा मिलेगा, जबकि गन्ने और शीरे से कई तरह के मूल्य संवर्धित उत्पादन तैयार किए जाएंगे। इसको लेकर शनिवार को एनएसआई और क्यूबा के क्यूबन रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑन शुगरकेन डेरिवेटिव्स के बीच एमओयू साइन हो सकता है। यह

करार तीन साल के लिए रहेगा। संस्थान के विशेषज्ञ क्यूबा जाएंगे और वहां की चीनी मिलों में तकनीक विकसित करेंगे, जबकि वहां के विशेषज्ञों को एनएसआई में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाएगा। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि क्यूबन रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑन शुगरकेन डेरिवेटिव्स की जनरल डायरेक्टर मारिएला गैलार्डो कैपोट के नेतृत्व में एक टीम फरवरी में संस्थान आ चुकी है। उनके विशेषज्ञों ने यहां की शिक्षा, शोध कार्य और प्रोजेक्ट देखे। यहां की तकनीक से चीनी मिलों और डिस्टलरी उद्योग के विकास की जानकारी की। संस्थान शीघ्र ही समझौते पर औपचारिक हस्ताक्षर के लिए खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के साथ करार करेगा।

मारिएला गैलार्डो कैपोट के मुताबिक क्यूबा को किसी समय दुनिया का चीनी का कटोरा कहा जाता था। यहां से पश्चिमी देशों को बड़े पैमाने पर चीनी का निर्यात होता था। अब देश की हालत दयनीय है। वहां से ज्यादा ब्राजील और भारत से चीनी निर्यात की जा रही है। इसकी बड़ी वजह क्यूबा की चीनी मिलों में नवीन तकनीक का अभाव है। इसलिए वहां की बेहतर व्यवस्था को लेकर एनएसआई के साथ करार किया जाएगा।

फ्लेवर्ड चीनी और खोई से बनेंगे उत्पाद

प्रो. नरेंद्र मोहन के मुताबिक क्यूबा में चीनी मिलों की आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए उनकी बेकार की वस्तुओं से मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार किये जाएंगे। वहां की चीनी मिलें इनका उत्पादन कर किसानों की आय को भी बढ़ा सकेंगी। संस्थान ने गन्ने की बेकार खोई से बिस्कुट, केक और अन्य बेकरी आइटम तैयार किए हैं। कृत्रिम बोर्ड, कप और प्लेटें भी शामिल हैं। इसके अलावा फ्लेवर्ड चीनी और इम्यूनिटी बढ़ाने वाली शुगर का उत्पादन कराया जाएगा, जिसकी टॉफी, चॉकलेट और अन्य औद्योगिक इकाईयों की काफी मांग है। क्यूबा के साथ मिलकर एनएसआई कई तरह के स्टार्टअप करेगा। उनके यहां हरित ऊर्जा विकसित की जाएगी, जिससे उनकी लागत में कटौती हो सकेगी।

Cuba seeks help of NSI to enhance productivity of its sugar units

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

Cuba, once known as "Sugar Bowl" of the world seeks support of National Sugar Institute,Kanpur to enhance productivity of it's sugar units through modernisation and technological advancements and to utilise byproducts for producing many other value-added products including green energy.This was informed by the Director of the NSI, Prof Narendra Mohan on Saturday. He said the Cuban Research Institute on Sugarcane Derivatives (ICIDCA), under the aegis of the Sugar Enterprises Group of Cuba (AZCUBA) has intended to enter into a Memorandum of Understanding for three years for the purpose. A team led by Mariela Gallardo Capote, General Director, The Cuban Research Institute on Sugarcane Derivatives visited the institute in February 2023 to look into the activities and to have preliminary discussions. Mohan said the NSI and Cuban team had another round of discussions on the subject and now have formally received the draft MoU from their end. He said Cuba was known as the 'sugar bowl of the world', as it used to have largest sugar industry which was now in a state of decay and its position was now taken up by Brazil followed by India.

Sugar industry in Cuba was heavily dependent on exports to erstwhile Soviet Union and East European State but after collapse of Soviet Union, the sugar industry in Cuba suffered a set-back and the plant efficiencies and byproduct management and thus they wanted NSI to show way for improvement.

It was a wonderful visit to the institute and we are keen to enter into this agreement which focussed on conducting staff development programmes, exchange of researchers and technology transfer said Mariela General Director, The Cuban Research Institute on Sugarcane Derivatives. She said we were seeking approval of our Administrative Ministry, Ministry of Consumer Affairs, Food & Public Distribution for formal signing of the agreement at the earliest.

Links for Digital News

By economypost: Cuba seeking 'sugary' support from India